परमेश्वर के योजना को खोजे: शांति और जीवन

1

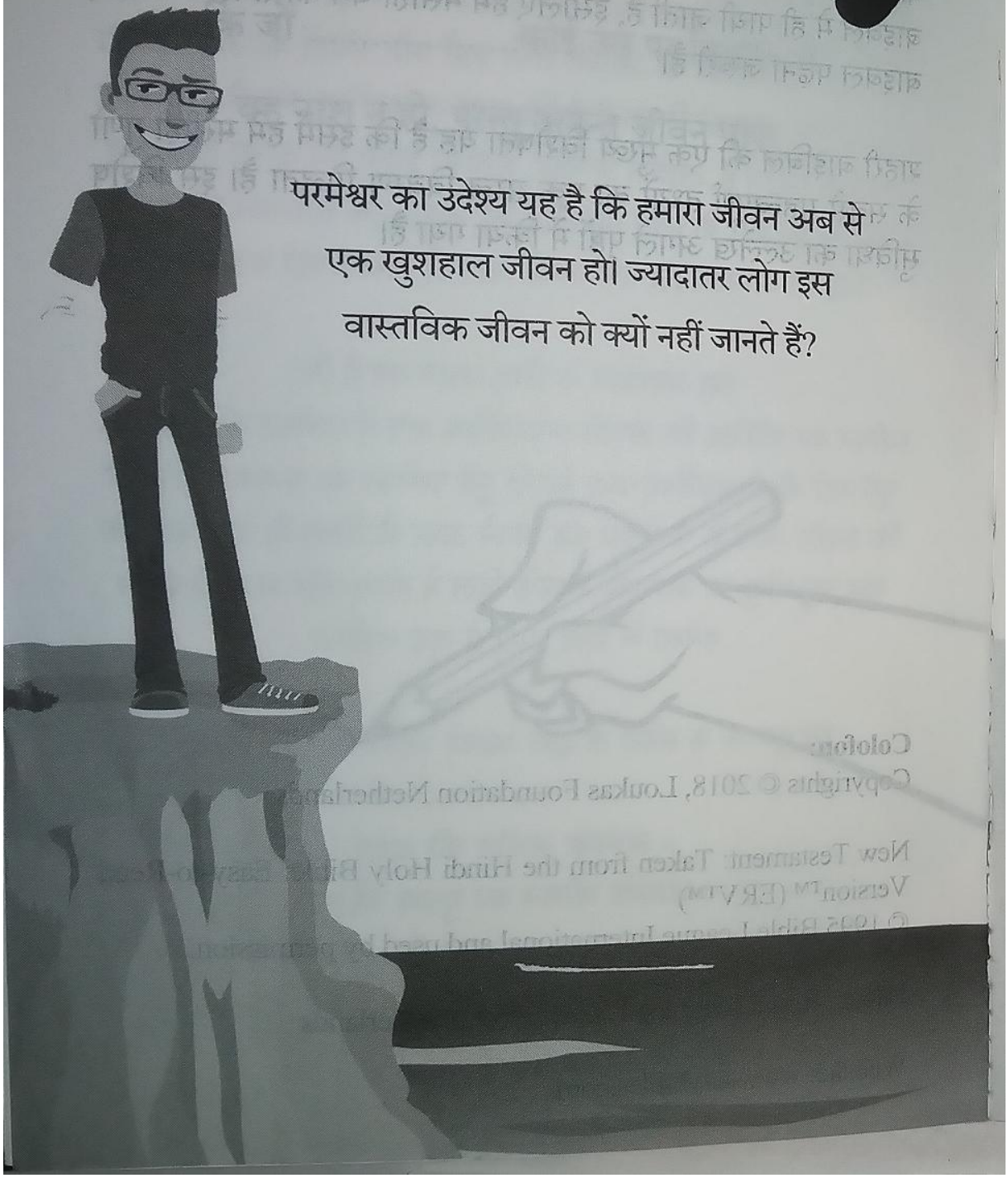

परमेश्वर का उदेश्य यह है कि हमारा जीवन अब से एक खुशहाल जीवन हो। ज्यादातर लोग इस वास्तविक जीवन को क्यों नहीं जानते हैं?

परमेश्वर सारे मानव जाति से प्रेम करता है और वह आपसे से भी प्रेम करता है। वह चाहता है कि आप उसकी शांति का अनुभव करें और जो कार्य आप करते हैं उसमें आपको खुशी मिलें। यही: परमेश्वर की शांति हमारे और एक दूसरे के साथ बनी रहें।

बाइबिल से उद्धरण:

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। {यूहन्ना 3:16}

इस पाठ में संसार के स्थान पर

अपना नाम..... रख कर देखे।

समस्या: परमेश्वर और मनुष्य (महिलाओं) के बीच विभाजन

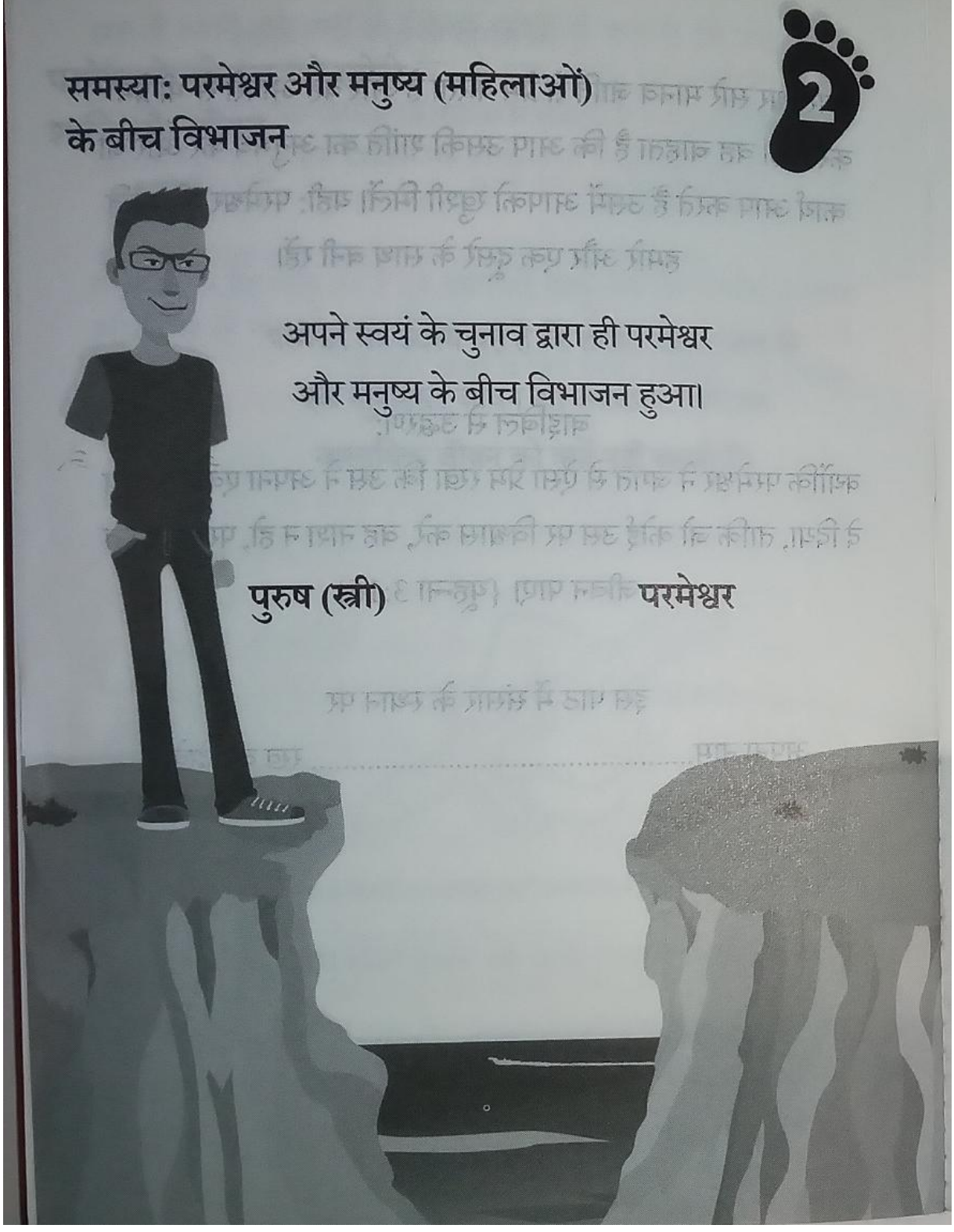

परमेश्वर ने मनुष्य को इसलिए बनाया क्योंकि वह एक दोस्त चाहता था। वह हमसे और लोगों से सहभागीता रखना चाहता था। उसने एक आश्चर्यजनक रूप में हमारी रचना कर के हमे एक अद्भुत और सुंदर जीवन दिया। परमेश्वर ने मनुष्य का रोबोट नहीं बनाया, कि कोई भी जो स्वचालित रूप से प्यार करेगा और वह उसकी बात माना करेगा। उन्होने एक अच्छे मित्र की तरहा मनुष्य को स्वतंत्रता दी ताकि वह अपनी इच्छा का चयन करें।

हालांकि, पहले व्यक्ति ने स्वयं ही अपने मार्ग का चुनाव किया। इसलिए अब सभी मानवजाती को जो उसने किया उसके परिणामों का भुगतान करना होगा। इसे पाप कहा जाता है और इसका शाब्दिक अर्थ है: अपने लक्ष्य से भटक जाना। पाप के कारण मनुष्य ने परमेश्वर के साथ अपनी मित्रता को खो दिया है। अब परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक दूरी आ गई है और इस ब्रिज को स्वयं पार नहीं किया जा सकता है।

बाइबल यह बताती है:
सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं
(रोमियों 3: 23)

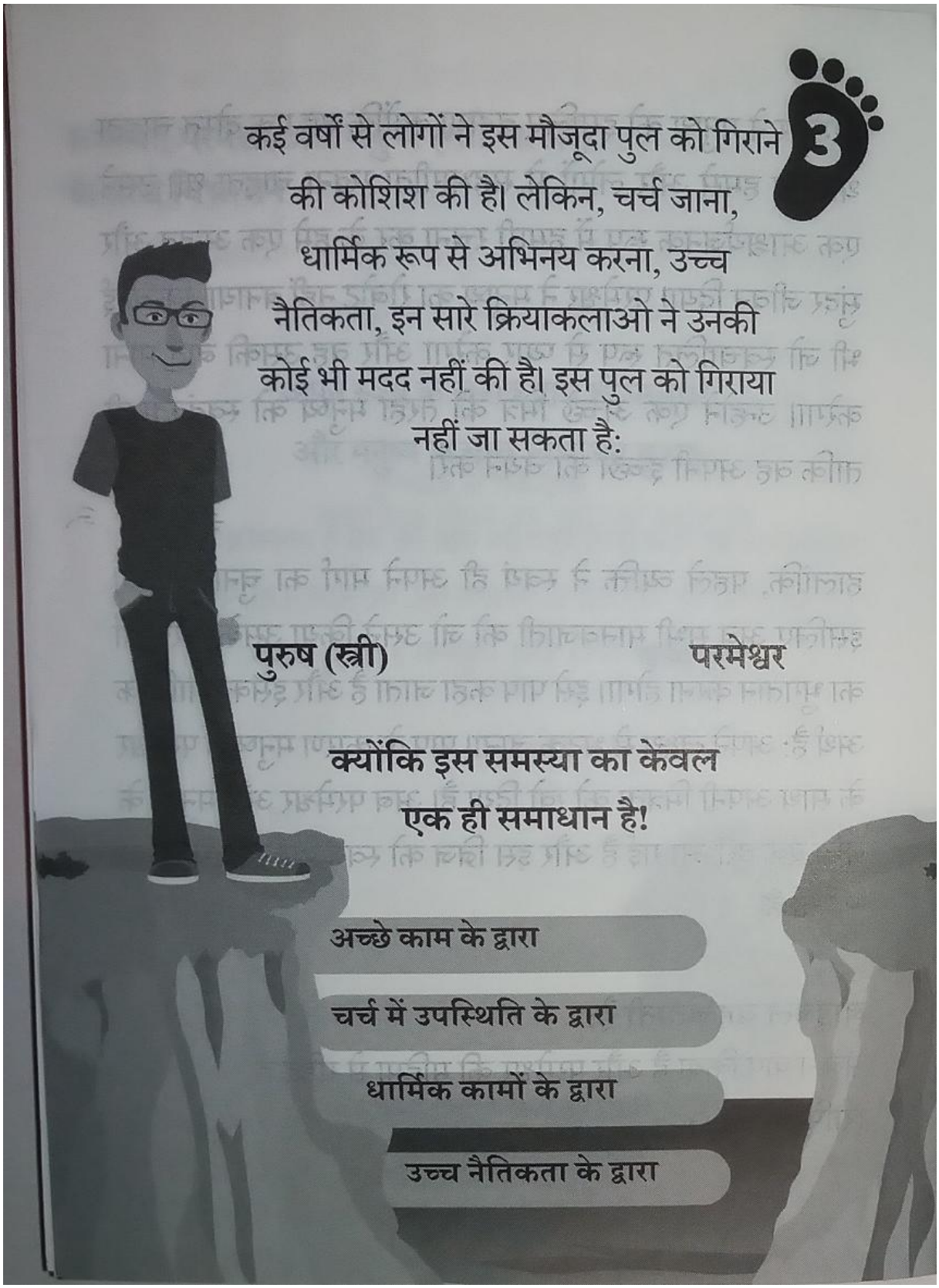
3
कई वर्षों से लोगों ने इस मौजूदा पुल को गिराने की कोशिश की है। लेकिन, चर्च जाना, धार्मिक रूप से अभिनय करना, उच्च नैतिकता, इन सारे क्रियाकलाओ ने उनकी कोई भी मदद नहीं की है। इस पुल को गिराया नहीं जा सकता है:
पुरुष (स्त्री)
परमेश्वर
क्योंकि इस समस्या का केवल एक ही समाधान है!
अच्छे काम के द्वारा
चर्च में उपस्थिति के द्वारा
धार्मिक कामों के द्वारा
उच्च नैतिकता के द्वारा

परमेश्वर का समाधान: यीशु मसीह

4

स्वयं परमेश्वर ने ही एक मार्ग तैयार किया है... प्रत्येक व्यक्ति के पास यह चुनाव करने का अधिकार है कि वो इस मार्ग पर चले या नहीं, सच्चाई पर विश्वास करे या नहीं, उस जीवन की खोज करे या नहीं।

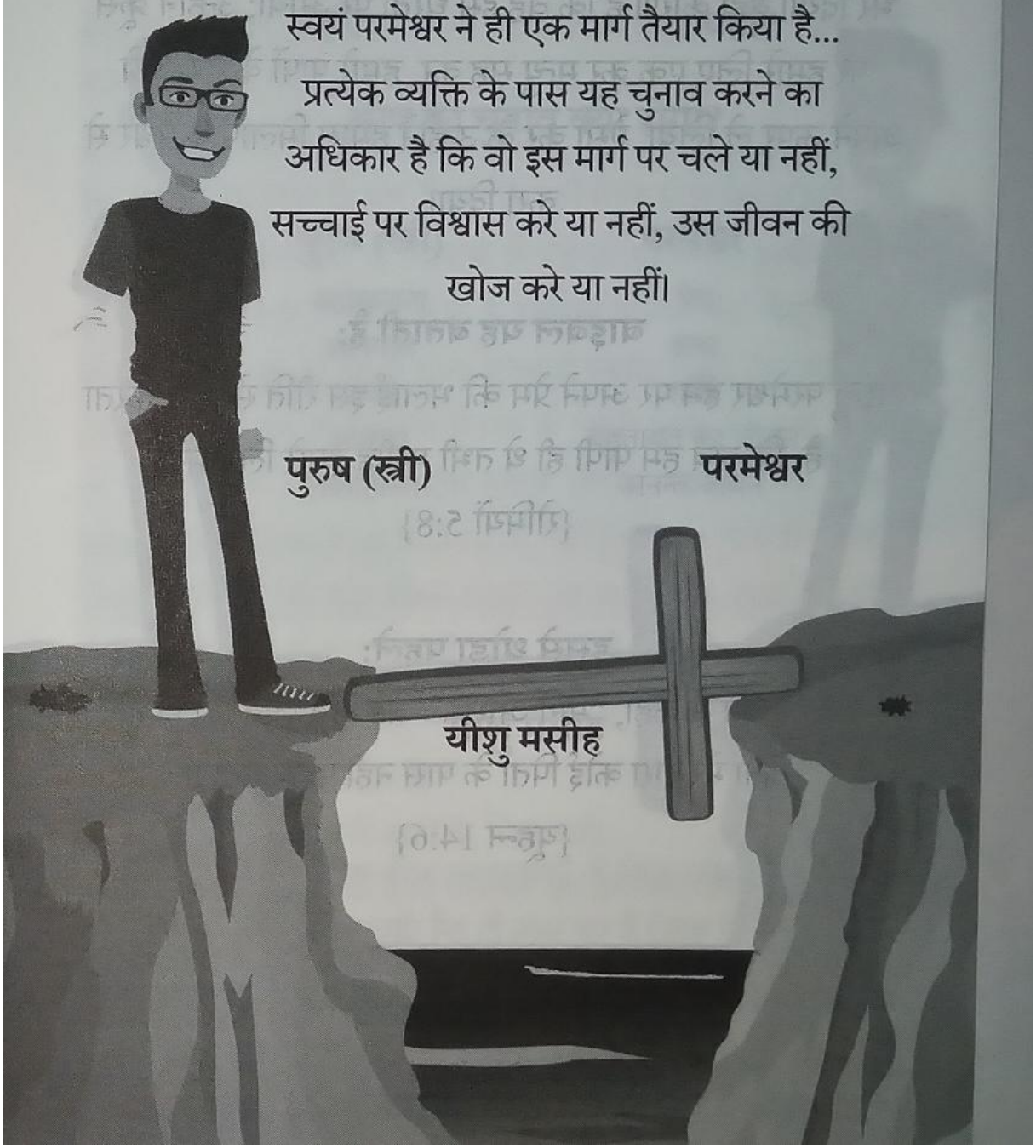

आखिरकार परमेश्वर स्वयं उस समाधान के साथ आयें। मनुष्य रूप धारण कर के प्रभु यीशु ने हमारे और परमेश्वर के बीच की दुरी को भर दिया। यही कारण है कि वह इस धरती पर आया; उन्होने क्रूस पर हमारे लिए एक क्रूर मृत्यु सह कर, हमारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर ले लिया, ऐसा कर के उन्होने हमारा मिलाप परमेश्वर से करा दिया।

बाइबल यह बताती है:

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

{रोमियों 5:8}

इससे थोड़ा पहले:

यीशु ने उस से कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं" बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

{यूहन्न 14:6}

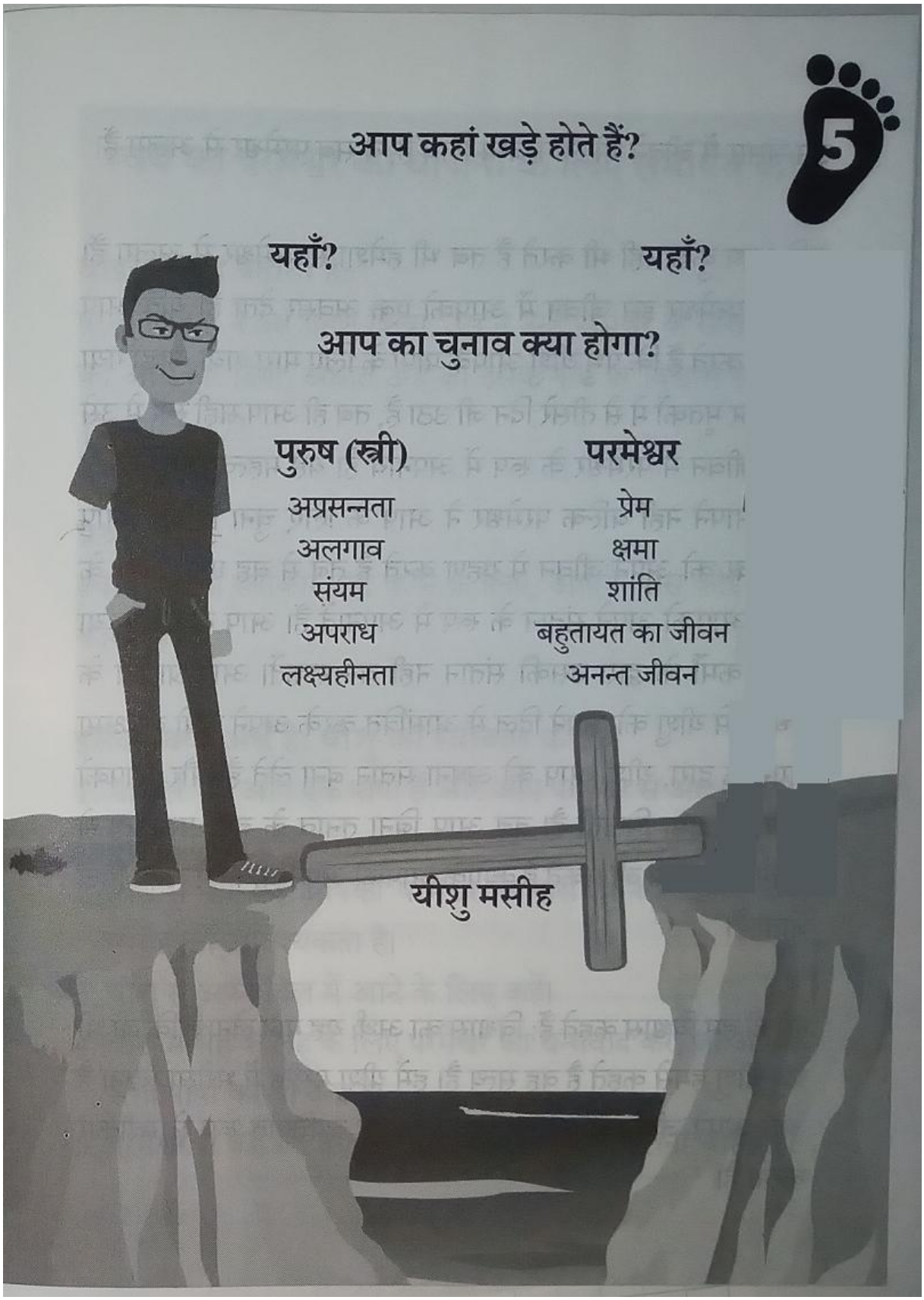

5
आप कहां खड़े होते हैं?
यहाँ?
यहाँ?
आप का चुनाव क्या होगा?
पुरुष (स्त्री)
अप्रसन्नता
अलगाव
संयम
अपराध
लक्ष्यहीनता
परमेश्वर
प्रेम
क्षमा
शांति
बहुतायत का जीवन
अनन्त जीवन
यीशु मसीह

इस संसार में जीतने भी लोग जन्म लियेँ हैं, वें सब परमेश्वर से अलग हैं।

यदि आप कुछ नहीं भी करते हैं तब भी हमेशा से परमेश्वर से अलग हैं। लेकिन परमेश्वर इस जीवन में आपको एक अवसर देता है। यदि आप विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु आपके पापों के लिए मारा गया, गाड़ा गया और फिर मृतकों मे से तीसरे दिन जी उठा हैं, तब ही आप सही रूप मे उसे अपने जीवन मे परमेश्वर के रूप में अपनायेँ हैं। यह महत्वपूर्ण चुनाव है जिसे आपने नहीं बल्कि परमेश्वर ने आप के लिए चुना हैं। जब आप परमेशवर को अपने जीवन मे ग्रहण करते है तब से वह एक पित्ता के समान आपको अपने संतान के रूप मे अपनातें हैं। आप बपतिस्मा या अच्छे कर्मों के द्वारा उसकी संतान नहीं बन सकतें। आप प्रार्थना के माध्यम से यीशु को अपने दिल मे आमंत्रित करके अपने पापो की क्षमा मांगने के द्वारा, यीशु आप को अपना संतान बना लेते है और आपको पापों की क्षमा मिलती है। तब आप बिना तनाव के बड़ी प्रसन्नता से अपने जीवन को जी सकते है क्योंकि आपको अपने जीवन में लक्ष्य मिल जाता हैं।

इसे ही हम विश्वास कहते हैं: विश्वास का अर्थ: यह मान लेना है कि जो भी प्रभु यीशु हमसे कहते है वह सत्य है। हमें यीशु मसीह में भरोसा रखना है और अपने जीवन मे उसे पामेश्वर मान कर व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करना है।

स्वयं को परमेश्वर की योजना के लिए समर्पित करें

बाइबल यह बताती है:

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। {यूहन्ना 1:12}

प्रश्न:

क्या यीशु को स्वीकार नहीं करने के लिए, आपके पास कोई उचित कारण है?

इसका क्या अर्थ है: यीशु को स्वीकार करें?

1. मान लें की आप एक पापी हैं और आप परमेश्वर से अलग हो गए हैं।
2. विश्वास करें की आपको परमेश्वर के पास आने के लिए यीशु मसीह की आवश्यकता है।
3. यीशु से अपने दिल में आने के लिए कहें।
4. यीशु मसीह के लहू के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें, जो आपके सभी पापों को धो देता है।
5. परमेश्वर से कहें कि आप जीवन भर उनके पीछे चलना चाहतें हैं।

जब आप परमेश्वर से प्रार्थना करें तो आप निम्नलिखित बातें कह सकते हैं:

परमेश्वर मैं यह मानता हूँ कि मैं एक पापी हूं और मुझे आपकी क्षमा की ज़रूरत है

वास्तव में मुझे एहसास है कि प्रभु यीशु मसीह मेरे लिए मर गया, और वह मरे हुओं में से उठा है।

मैं अपने पुराने जीवन के मार्ग को छोड़ने के लिए तैयार हूं

मैं प्रार्थना करता हूं कि यीशु मसीह आप मेरे दिल और मेरे जीवन में आईए: ताकि मैं आपसे अपने पित्ता की तरहा मिल सकूं और आपको बेहतर तरीके से जान सकूं।

आपकी सहायता से हीं मैं आपके पीछे चलने और आपकी आज्ञा का पालन करने को तैयार हूँ।

आमीन

यदि आप इस पुस्तक मैं बतायी गई बातों को और भी अधिक जानना चाहते हैं, तो कृपया किसी ऐसे व्यक्ति से संपर्क करें जो आपको यह पुस्तक दे सकें। वे परमेश्वर के शांति के मार्ग पर आपकी सहायता करके अत्यंत प्रसन्न होंगे।

WWW.GABBERTIJD.NL
IS VERANDERD ALSO ENGLISH